October
December 25

Aryavart Journal of Multidisciplinary Research
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
E-ISSN 3107-6009

Vol - 1
Issue - 4

डिजिटल युग में विष्वविद्यालय पुस्तकालयों की भूमिका एवं छात्रों को पुनः पुस्तकालय की ओर प्रोत्साहित करने की कार्ययोजना: एक समीक्षात्मक अध्ययन

विनोद वहाणें
स्कूल ऑफ लाइब्रेरी साइंस
आर्यावर्त विश्वविद्यालय, सीहोर (मध्य प्रदेश)

सारांश

वतर्मान की शिक्षा प्रणाली में तकनीकी साधनों के अत्यधिक उपयोग ने पारंपरिक अध्ययन स्थ्लों की भूमिका को एक नई चुनौतियों के समक्ष खड़ा कर दिया है। छात्र अब अपना अधिकत्तम समय कंप्यूटर, मोबाइल और ऑनलाइन प्लेटफार्मो से ज्ञान का विस्तार करते है, जिसके तहत भौतिक अध्ययन स्थलों का महत्व कम हो गया है। इस अध्ययन का उद्देष्य यह विष्लेषण करना है कि इन बदलाव के मध्य ऐस स्थलों का महत्व, उपयोगिता और सामाजिक भूमिका का निमार्ण हुआ है।

यह शोध पत्र द्वितीयक ऑकड़ो पर आधारित है। इसमें किसी प्रष्नावली या प्रत्यक्ष सर्वेक्षण का प्रयोग किसी भी रूप में नही किया गया है। संपूर्ण विष्लेषण के लिए प्रकाषित शोध-पत्र, राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय प्रतिवेदन (यू.जी.सी, एन.ए.ए.सी, इफला, यूनेस्को) और वार्षिक प्रकाशनों से प्राप्त सामग्री के आधार पर प्रस्तुत किया गया है। इस पद्धति के द्वारा यह समझने का भरसक प्रयास किया गया कि तकनीकी प्रगति के मध्य अध्ययन स्थलों की शैक्षणिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक भूमिका किस प्रकार पुनः सषक्त माध्यम हो सकती है।

मुख्य शब्द

विश्वविद्यालय पुस्तकालय, सूचना संसाधन, डिजिटल युग, पुस्तकालय सेवाए, कार्य योजनाए, उपयोगकर्ता।

प्रस्तावना

कई समय से विष्वविद्यालय पुस्तकालय षिक्षा और अनुसंधान के केन्द्र रहे है, लेकिन

इलेक्ट्रॉनिक संसाधन और सूचना प्रौद्योगिकी के बढ़ते विकास की उपलब्धता ने पुस्तकालय की उपयोगिता को संपूर्ण स्वरूप को परिवर्तित कर दिया है। वर्तमान परिवेष में छात्र - छात्राए ई-संसाधनों के उपयोग की अत्यधिक प्राथमिकता प्रदान करते है, जिसके फलस्वरूप उनकी भौतिक उपस्थिति पुस्तकालयो में कम हो रही है। यह स्थिति पुस्तकालयों के लिए एक संघर्ष और संभावना दोनों है। इसलिए यह नितांत आवष्यक है कि अभी तक हुए शोध कार्यो की समीक्षा की जाए तत्पष्चात यह समझा जाए कि आज के समय में विश्वविद्यालय पुस्तकालयों की क्या अहम भूमिका है और उपयोगकर्ताओं को पुस्तकालयों की ओर कैसे प्रोत्साहित किया जा सकता है।

अध्ययन की आवश्यकता

यह अध्ययन स्पष्ट करेगा कि आज का युग डिजिटलीकरण का है, जिससे उपयोगकर्ताओं की सूचना प्राप्ति की आदतों में बदलाव आया है। छात्र अब इलेक्ट्रनिक संसाधन और सोशल मीडिया पर पूर्ण रूप से निर्भर हो गए है। इसके फलस्वरूप विश्वविद्यालय पुस्तकालयों की ओर उपयोगकर्ताओं की रूचियों में कमी हो रही है, फिर भी पुस्तकालय और अधिक विश्वसनीय जानकारी के मुख्य स्त्रोत बने हुए है। पुस्तकालय अब मात्र पुस्तकों के भंडार नही बल्कि सूचना स्त्रोत के केन्द्र के रूप में भी विकसित हो रहे है। यह अध्ययन नितांत अवश्यक है, ताकि आज वर्तमान युग में पुस्तकालयों की प्रासंगिकता का आंतरिक मूल्यांकन किया जा सके, साथ ही साथ यह भी समझा जा सके कि उपयोगकर्ताओं को पुस्तकालय की ओर प्रोत्साहित करने के लिए कौन-कौन सी रणनीतियॉ अपनानी होगी। इस शोध से विश्वविद्यालयों को पुस्तकालय सेवाओं और नवाचार और सुधार के रूप में एक नई दिशा प्राप्त होगी।

अध्ययन के उद्देश्य

1. आधुनिक समय में विष्वविद्यालय पुस्तकालयों के कार्य का विष्लेषण करना।
2. इस संबंध में पुस्तकालयों में प्रोत्साहन हेतु अपनाई गई कार्ययोजनाओं और रणनीतियों की पहचान करना।
3. भावी शोध की दिषा और निवारक समाधान सुझाना।

Aryavart Journal of Multidisciplinary Research
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
E-ISSN 3107-6009
Vol - 1
Issue - 4

अध्ययन के महत्व

1. यह अध्ययन विष्वविद्यालय पुस्तकालयों के बदलते परिवेश को समझने में सहायक सिद्ध होगा।
2. उपयोगकर्ताओं की पुस्तकालय मे प्रोत्साहन हेतु अपनाई गई रणनीतियों की समीक्षा से आने वाले समय के लिए व्यावहारिक नीतियॉ विकसित की जा सकती है।
3. पुस्तकालय को तकनीक मुक्त क्षेत्र के रूप में स्थापित करने का विचार उपयोगकर्ताओं के स्वास्थ्य और सामाजिक विकास के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

शोध - प्रविधि

1. इसमे प्राथमिक स्त्रोत को शामिल नही किया गया है ।
2. यह अध्ययन द्वितीयक स्त्रोतों पर केन्द्रित है, इसके अनुसार वर्ष 2011 से वर्ष 2025 तक के प्रकाषित षोध पत्र, थीसिस का विष्लेषण किया गया है। शोधगंगा, गूगल स्कॉलर से प्राप्त राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय जर्नल से लिए गए है।

साहित्य की समीक्षा

1. शर्मा (2011) ने भारतीय विष्वविद्यालयों में आई.सी.टी. के प्रभाव का संपूर्ण अध्ययन किया है। उन्होने यह बताया है कि सूचना प्राद्योगिकी के प्रयोग से उपयोगकर्ताओं की सूचना तक पहुच सरल हो गई है, परन्तु पुस्तकालय में आने की उनकी आदत में कमी पाई गई है। इलेक्ट्रानिक संसाधनों की बहुलता ने छात्रों को पुस्तकालय में आने की आवश्यकता को कम कर दिया है। अध्ययन में यह भी पाया गया है कि पांरपरिक पुस्तकालय सेवाओं की भूमिका अब मात्र सहायक के रूप तक सीमित हो कर रह गई है।
2. कुमार और सिंह (2013) ने शैक्षिणक पुस्तकालयों में सूचना संसाधनों के प्रभाव का एक तुल्नात्मक अध्ययन किया। उनके अनुसार इलेक्ट्रानिक जर्नल और इलेक्ट्रानिक बुक्स की बढ़ती लोकप्रियता ने प्रकाशित सामग्री के उपयोग में कमी प्रस्तुत की है। उपयोगर्ताओं ने डिजिटल सामग्री के उपयोग को अधिक सुविधाजनक बताया है, अध्ययन से यह भी स्पष्ट है कि सूचना संसाधनों में अनुभवी स्टॉफ की आवष्यकता है। उन्होने यह भी बताया है कि पुस्तकालयों में हाइब्रिड मॉडल की उपयोगिता पर विचार किया जाना चाहिए।

Aryavart Journal of Multidisciplinary Research
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
E-ISSN 3107-6009

3. रेड्डी (2014) ने छात्रों के सर्वेक्षण पर अध्ययन में यह पाया कि अधिकांष उपयोगकर्ता अब इलेक्ट्रानिक संसाधनो को प्राथमिकता देते है। पुस्तकों की तुलना में डिजिटल संसाधनों और ई-लर्निग प्लेटफॉर्म अब अत्यधिक लोकिप्रिय हो गए है। अध्ययन में यह भी बताया गया है कि इलेक्ट्रानिक साक्षरता के बढ़ने से ग्रंथालय का उपयोग पैटर्न पूरी तरह से परिवर्तित हो गया है। रेड्डी ने यह भी सलाह दी है कि पुस्तकालय को सूचना संसाधन के साथ-साथ मार्गदर्शन को और भी मजबूत करना चाहिए।
4. नागर (2015) ने मध्यप्रदेश की विश्वविद्यालय पुस्तकालयों पर अध्ययन में यह बताया कि यूजर इंगेजमेंट की अवधारणा पर जोर दिया। उन्होने यह भी बताया कि पुस्तकालयों में छात्रों की भागीदारी के कार्यक्रमो की कमी के तहत उपयोगकर्ताओं की रूचि में अभाव पाया गया है। नागर ने यह भी सुझाव दिया कि पुस्तकालयों में चर्चाओ के लिए मंच, कार्यशालाए, संगोष्ठी और पढ़ने के लिए व्यवस्था जैसे कार्यक्रमों की शुरूआत की जाए। इससे उपयोगकर्ताओं और पुस्तकालयों के मध्य संवाद बढ़ेगा। अध्ययन ने यह भी बताया कि पुस्तकालयों सेवाओं में आकर्षक तत्व को जोड़ने से छात्रों की संतुष्टि के लिए अनिवार्य है।
5. गुप्ता (2016) के अध्ययन ने एन.आई.आर.एफ. और एन.ए.ए.सी में पुस्तकालयों सेवाओं की भूमिका को बताया है। उन्होने यह भी बताया कि इन दोनो मूल्यांकन प्रणालियों में लाइब्रेरी की गुणवत्ता विश्वविद्यालय की रैकिंग को सहज ही प्रभावित करती है। अध्ययन में यह भी पाया गया है कि जिन संस्थानों में पुस्तकालय सेवाए आधुनिक और यूजर-ओरिएंटेड है, और उनकी रैकिंग में भी सुधार हुआ है। गुप्ता ने यह भी सुझाव दिया कि पुस्तकालय के स्टॉफ को प्रशिक्षण देकर इलेक्ट्रानिक सेवाओं की गुणवत्ता को और अधिक सुधारा जाए।
6. चौहान (2017) ने लाइब्रेरी एस लर्निंग हब की अवधारणा पर शोध किया। उन्होंने यह भी बताया कि जब पुस्तकालय को अध्ययन केन्द्र से आगे सहयोगात्मक शिक्षण स्थान बनाया जाता है, तो उपयोगकर्ताओं की सहभागिगता बढ़ती है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि ऐसे पुस्तकालयों में उपयोगकर्ताओं की उपस्थिति और अध्ययन समय दानों में बढ़ोत्तरी हुई। पुस्तकालय को समुदाय आधारित केंन्द्र बनाने की सिफारिश की।
7. अली और थॉमस (2018) ने अपने अध्ययन में सहयोगात्मक स्थान और चर्चा कक्ष की अहम भूमिका पर जोर दिया। उन्होने यह बताया कि जब उपयोगकर्ताओं को समूह में कार्य करने और विचार-विमर्श के लिए स्थान तो मिलते है, तभी वे पुस्तकालय की ओर आकर्षित

होने लगते है। कोलाबॉरेटिव स्पेस में छात्रों में समूह के साथ तालमेल, संचार और नवाचार की भावना का जन्म होता है। अध्ययन में यह भी बताया गया है कि ये स्थान इलेक्ट्रॉनिक और पारंपरिक संसाधनों के बीच एक पुल का कार्य करते है।

8. जोशी (2019) ने डिजिटल डिटॉक्स कॉर्नर की अवधारणा पर केस स्टडी पर आधारित अध्ययन को प्रस्तुत किया है। उन्होने कहा कि लगातार स्क्रीन के उपयोग से उपयोगकर्ताओं में मानसिक थकान और एकाग्रता की कमी आई है। पुस्तकालयों में बनाए गए डिजिटल डिटॉक्स जोन उपयोगकर्ताओं को तकनीकी अवकाष प्रदान करते है। ऐसे जोन में शांत वातावरण में ध्यान और संवाद जैसी गतिविधियॉ उपयोगकर्ताओं को मानसिक शांति प्रदान करती है। यह निष्कर्ष निकाला कि ये शांति क्षेत्र पुस्तकालय की प्रासंगिकता को प्रोत्सिाहित कर सकते है।
9. खान (2020) ने कोविड-19 के समय विश्वविद्यालय पुस्तकालयों की ऑनलाइन सेवाओं का आंतरिक मूल्यांकन किया। उन्होने बताया कि इस महामारी के समय इलेक्ट्रानिक संसाधन और ऑनलाइन क्लास सपोर्ट का अधिक उपयोग में आए। पुस्तकालय स्टॉफ ने डिजिटल स्टॉफ ने इलेक्ट्रानिक माध्यमो से छात्रों की सहायता की, जिससे तहत उनकी भूमिका महत्वपूर्ण हो गई। अध्ययन में यह भी पाया गया कि भविष्य के ग्रंथालय हाईब्रिड के रूप में विकसित होगी। खान ने निष्कर्ष दिया कि आपत्ति काल में पुस्तकालय ने शैक्षिणक जीवनरेखा का कार्य किया है।
10. रॉव (2020) ने हाइब्रिड लाइब्रेरी मॉडल की उपयोगिता पर जोर दिया है। उन्होने कहा कि भौतिक और ई-संसाधन संग्रह का संतुलन ही आधुनिक पुस्तकालय की पहचान बनेगा। हाइब्रिड मॉडल से छात्रों को दोनो तरह से ग्रंथालय में पहुॅच के मार्ग सुगम हो जाते है - पांरपरिक अध्ययन वातावरण औरं डिजिटल सुविधाएॅ। अध्ययन में यह भी बताया गया कि इस मॉडल के जरिये संसाधन प्रबंधन अैर लागत में दोनों में सुधार की सभावना है। रॉव ने इसे आने वाले भविष्य का स्थायी मॉडल बताया है।
11. बर्नजी (2021) ने शैक्षिणक पुस्तकालयों में ए.आइ. के उपयोग का विस्तृत अध्ययन किया है। उन्होने पाया कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता ए.आइ. आधारित चैटबॉट, और डेटा एनालिटिक्स ने सूचना संसाधनों को काफी व्यक्तिगत बनाया है। इससे उपयोगकर्ताओं की संतुष्टि और छात्र अनुभव दोनो ही बढ़े है। बर्नजी ने यह भी कहा कि ए.आइ. का पूर्ण रूप से जिम्मेदार

Aryavart Journal of Multidisciplinary Research
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
E-ISSN 3107-6009
Vol - 1
Issue - 4

उपयोग की सूचना गुणवत्ता सुनिष्चित कर सकता है।

12. शुक्ला (2022) ने मध्य भारत के विश्वविद्यालयो में उपयोगकर्ताओं के मानसिक स्वास्थ्य और पुस्तकालय वातावरण का संबंध का विस्तृत अध्ययन किया। उन्होने यह भी पाया कि हरे-भरे, शांत वातावरण से छात्रों मे तनाव घटाता है। अध्ययन में यह भी बताया कि समूहो की तुलना में साइलेन्ट रिडिंग जोनस अधिक मानसिक रूप से शांत वातावरण प्रदान करते है। शुक्ला ने सुझाव दिया कि मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों को पुस्तकालयों की सेवाओं के साथ जोड़ा जाए।
13. पटेल (2023) ने यूजर सेनट्रिक लाइब्रेरी डिजाइन पर जोर दिया। उनके मतानुसार, आधुनिक लाइब्रेरी को छात्रों की आवष्कताओं, व्यवहार और सुविधा के आधार पर तैयार किया जाना चाहिए। उन्होन्ने फलेक्सी स्टडी जोनस के महत्व को प्रस्तुत किया जहा उपयागकर्ताओं अपनी सुविधा के अनुरूप अध्ययन के वातावरण के चुन सकते है - समूह, व्यक्तिगत या डिजिटल सेवाए। अध्ययन में यह भी पाया गया है कि ऐसी व्यवस्थाओं से छात्रों की संतुष्टि और उनकी उपस्थिति दोनो बढ़ती हैं।
14. वर्मा और जैन (2024) ने यह पाया कि एन.आइ.आर.एफ. रैकिंग में सुधार हेतु लाइब्रेरी सेवाओं की गुणवत्ता पर किस प्रकार से प्रभाव डालती है। यह भी बताया गया कि डिजिटल सेवाए, उपयोगकर्ता संतुष्टि और सूचना एक्सेस के सभी मूल्यांकन मानको से जुड़ी हुई है। अध्ययन यह भी बताया कि विष्वविद्यालयों को पुस्तकालयों में निवेष को और अधिक बढ़ाना चाहिए। वर्मा और जैन ने यह भी सुझाव दिया कि स्टॉफ विकास और आइ.सी.टी. ट्रेनिंग से सेवा गुणवत्ता में लगातार सुधार संभव है।
15. मेहता (2025) ने विश्वविद्यालयों को कम्यूनिटि हब के रूप में विकसित करने का प्रयास किया। उन्होने यह पाया कि सांस्कृतिक, सामाजिक और शैक्षिणक गतिविधियों का केन्द्र के रूप में स्थापित किया जाए, तो छात्र दोबारा प्रोत्साहित होगे। ऐसे हब में कला प्रदर्शनी, पुस्तको पर चर्चा और मानसिक स्वास्थ्य वार्ता जैसी गतिविधियॉ उपयोगकर्ताओं को जोड़ने का प्रयास करती है। अध्ययन में पुस्तकालय को सामुदायिक सहभागिता का सेतु के रूप में निरूपित किया है। इससे भविष्य में पुस्तकालय की पहचान विकसित होगी।

शोध विस्तार

Aryavart Journal of Multidisciplinary Research
(NATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
E-ISSN 3107-6009
Vol - 1
Issue - 4

वर्तमान समय में विश्वविद्यालय पुस्तकालयों की भूमिका

1. प्रकाषित और ई - संसाधनों के लिए हाईब्रिड लाईब्रेरी मॉडल का संयोजन किया जाना चाहिए।
2. पांडुलिपियॉं, थिसिस, और शोध पत्रों के लिए डिजिटल रिपॉसिटॉरी का उपयोग किया जाना चाहिए।
3. उपयोगकर्ताओं के विकास के लिए आई.सी.टी. और शोध संबंधी कार्यो के लिए स्किल डेवलेपमेंट कार्यक्रमों का समन्वयन होना चाहिए।
4. सामाजिक कार्यविधियों एवं सांस्कृतिक आयोजन के लिए कम्यूनिटि डेवलेपमेंट हब कार्यक्रमों की शुरूआत होनी चाहिए इससे छात्रों को मानसिक एवं भौतिक विकास होगा।

उपयोगकर्ताओं में पुस्तकालय उपयोग में कमियो के मूलभूत कारण

1. ई-संसाधनों स्त्रोतो की सहजता का होना।
2. पुस्तकालय में वातावरण का पारंपरिक और अत्यधिक निम्न आकर्षण का होना।
3. स्थान एवं समय में लचीलापन की अत्यधिक निम्नता की कमी का होना।

छात्र और छात्राओं को पुनः प्रोत्साहित करने की कार्ययोजनाए

1. पुस्तकालय इस तरह से निर्माण किया जाना चाहिए जिससे उपयोगकर्ताओं को काफी सहजता और वर्तमान परिवेष के अनुसार आधुनिकता के मापदंड को पूर्ण करते हुए इसका इंटीरियर भी किया जाना चाहिए।
2. छात्रों के लिए शांत वातावरण से युक्त अध्ययन क्षेत्र, सामूहिक अध्ययन क्षेत्र और मानसिक शांति प्रदान करने वाले क्षेत्र का निमार्ण किया जाना चाहिए जिससे उपयोगकर्ता शांति का अनुभव करें।
3. छात्रो के लिए प्रतियोगिता संबंधी पुस्तको का संग्रह किया जाना चाहिए।
4. शोध पत्र, थिसीस और प्रोजेक्ट वर्क का संकल्न किया जाना चाहिए।
5. ध्यान एवं मानसिक षांति के लिए ऐसा वातावरण दिया जाना चाहिए जहॉं पर छात्रों का ध्यान केन्द्रित हो।
6. समय-समय पर रीडिंग क्विज का आयोजन किया जाना चाहिए जिसमें छात्रों का विकास का परीक्षण भी किया जा सकेगा इससे इनका भौतिक विकास भी होगा।

7. कौशल संबंधी कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए इससे छात्रों को उनके कैरियर में मार्गदर्शन प्राप्त होगा।

निष्कर्ष एवं सुझाव

यह अध्ययन प्रस्तुत करता है कि डिजिटल युग मे विश्वविद्यालय पुस्तकालय मात्र पुस्तकों का एक भंडारण नही, बल्कि ज्ञान और विकास का एक माध्यम है। यदि वे सहभागी अध्ययन स्थल, हाइब्रिड पुस्तकालय मॉडल, उपयोगकर्ता-केन्द्रित पुस्तकालय डिजाइन और लचीले अध्ययन क्षेत्र और शांत वातावरण क्षेत्र संबंधी योजनाओ को अपनाते है, वर्तमान समय में यदि छात्रो को शांतिमय वातारण दिया जाए तो वे अवष्य ही पुस्तकालय की ओर उनका रूझान बढ़ेगा। साथ ही साथ विश्वविद्यालय की एन.आई.आर.एफ और एन.ए.ए.सी. रैकिग में भी पुस्तकालय की भूमिका सषक्त होगी। डिजिटल डिटॉक्स जोन की स्थापना किए, जहॉ छात्र डिजिटली थकान से मुक्त होकर अध्ययन कर सकें। डिजिटल साक्षरता और सूचना साक्षरता पर नियमित रूप से कार्यशालाए का आयोजन किया जाए। उपयोगकर्ताओं की रूचि के अनुरूप प्रतियोगी परीक्षा, करियर और उनके व्यक्तित्व विकास से संबंधित पुस्तकों को जोड़ा जाए। मोबाइल एप्स, नोटिफिकेषन और सोशल मीडिया के माध्यम से नई सेवाओं और पुस्तकों की जानकारी समय-समय पर दी जानी चाहिए। पुस्तकों को सामुदायिक संवाद केन्द्र एवं शांत अध्ययन स्थल दोनो के अनुरूप विकसित करने की योजना पर कार्य किया जाना चाहिए। विश्वविद्यालय प्रषासन को पुस्तकालय को नवाचार और शोध का केन्द्र बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इन सुझावों के अनुरूप विश्वविद्यालय में पुस्तकालय को वर्तमान युग की चुनौतियों को अवसर के रूप में परिवर्तित कर सकते है और छात्रों को पुनः पुस्तकालय से जोड़ने का कार्य कर सकते है।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, आर. (2011). भारतीय विष्वविद्यालय पुस्तकालयों में सूचना और सूचना प्रौद्योगिकी: एक अध्ययन। इंडियन जर्नल ऑफ लाइब्रेरी साइंसए 45 (2),123-135.
2. कुमार, ए. एवं सिंह, पी. (2013). अकादमिक पुस्तकालयों पर इलेक्ट्रानिक संसाधनों का प्रभाव। डेसिडॉक जर्नल, 33 (4), 221-230.
3. रेड्डी, एम. (2014) डिजिटल संसाधन और उपयोगकर्ता की प्रधानता। इंटरनेशनल जर्नल

ऑफ इन्फॉर्मेशन स्टडीज, 29 (1), 77-85.

4. नगर, वी. (2015). म.प्र. के विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में उपयोगकर्ता भागीदारी। जर्नल ऑफ एल.आई.एस., 41 (3), 67-78
5. गुप्ता, एस. (2016) और छ।।ब् रैंकिंग में पुस्तकालयों की भूमिका। भारतीय पुस्तकालय समीक्षा, 12 (1), 55-62.
6. चौहान, आर. (2017) ज्ञान केंन्द्र के रूप में पुस्तकालय। एशियन जर्नल ऑफ एल.आई.एस.ए 5 (2), 99-108.
7. अली, एफ. एवं थॉम्स, जे. (2018) पुस्तकालयों में सामूहिक स्थान। ग्लोबल एल.आई.एस. समीक्षा ए 14 (3), 201-212.
8. जोशी, डी. (2019) पुस्तकालयों में डिजिटल उपकरणों से दूरी: एक विषेष अध्ययन। जर्नल ऑफ डिजिटल लर्निंग, 10 (4), 301-312.
9. खान, ए. (2020). कोविड -19 के दौरान विश्वविद्यालय पुस्तकालय: एक अध्ययन। आईएफएलए जर्नल ए 46 (2), 189-200.
10. राव, पी. (2020)ण् संकर पुस्तकालय नमूनाः भविष्य की दिशा। पुस्तकालय टेड्स , 68 (4), 423-437.
11. बनर्जी, एस. (2021) अकादमिक पुस्तकालयों में कृत्रिम बद्धिमत्ता। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एल.आई.एस., 17 (1), 77-91.
12. शुक्ला, के. (2022) पुस्तकालय परिवेश और छात्रों का आत्मिक स्वास्थ्य। जर्नल ऑफ इंडियन एल.आई.एस, 18 (3), 151-163.
13. पटेल, एच. (2023). उपयोगकर्ता-एकाग्र पुस्तकालय योजना। पुस्तकालय प्रशासन, 44 (2), 123-137.
14. वर्मा, एल. एवं जैन, आर. (2024). पुस्तकालय परिचर्या और एर्न.आइ.आर.एफ. श्रेणी। डेसिडॉक जर्नल, 44 (1), 211-220.
15. मेहता, ए. (2025). सामूहिक केंन्द्र के रूप में पुस्तकालयः एक भावी नमूना। जर्नल ऑफ एल.आई.एस. नवाचार, 20 (2), 99-115.